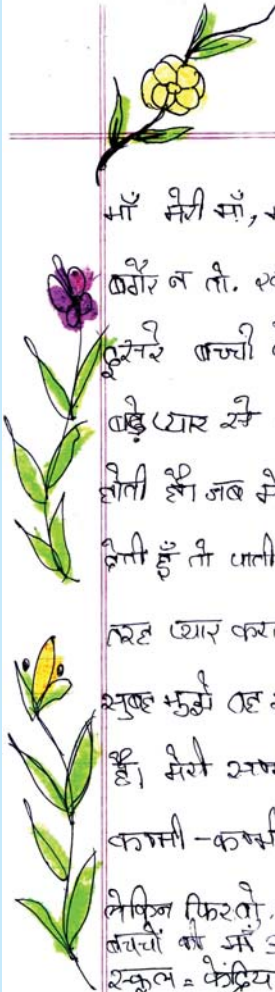


बालमन कुछ कहता है



माँ

माँ मेरी माँ, मुझे बहुत अच्छी लगती हूँ मैं माँ के
 और न तो. खाना खाती हूँ और न ही श्रोती हूँ जब मैं
 दूसरे बच्ची के माँ के बारे में कहती हूँ, तो मेरी माँ
 बड़े धार से सम्झपाती कि सभी बच्चों की माँ अच्छी
 होती हैं जब मैं अपनी माँ की कही बातों पर ध्यान
 देती हूँ तो पाती हूँ कि उन बच्चों की माँ भी उन्हीं उन्हीं
 तरह व्यवहार करती हैं, मेरी माँ मुझे कहती हैं
 मुझे मुझे वह स्कूल के बिना न पढ़ा करती हैं सिर्फ न पढ़ाती
 हैं, मेरे सभी बच्चों की देख-भाल करती हैं
 कभी-कभी मेरे कारण बाराह हो जाती हैं
 लेकिन फिर तो मुझे मनाती हैं मैं मनाती हूँ अपनी
 बच्चों को मैं उनके साथ रहूँ और बार-बार
 स्कूल = केन्द्रीय विद्यालय नाम = जूनियर हाई
 स्कूल सी ई आर एन गान्धी कक्षा = 10 B



बालमन कुछ कहता है

चंदामामा

चंदामामा गोल मटोल
कुछ तो बोल कुछ तो बोल
कल थे आधे आज हो गोल
अब तो खेलो अपनी पोल
रात को ही तुम आते हो
साथ सितारे लाते हो।
दिन में कहाँ छुप जाते हो।
कुछ तो बोल कुछ तो बोल



Sneha

Class - I D

School - Mother's international

बालमन कुछ कहता है

अक्टूबर २०११

classmate

Date _____

Page _____

बालमन कुछ कहता है

मेरा बालमन कहता है कि मैं बड़े होकर डॉक्टर बनूँगा। डॉक्टर बन कर मैं गरीबों का मुँह में इलाज करूँगा ताकि जैसे की कमी के कारण उनका इलाज हो सके। और बीमारी में उनका ऐसा बख़ावत हो। उन्हें बीमारी के च गरीबी के चलते बीमारी से तड़पना न पड़े।



Chetna

class - VII - F

School - K.V.J.W.C. Campus

कैसे

वीरा लायल*

पता नहीं कैसे सूरज, चुपके से आ जाता है?
धीरे-धीरे पूरे जग में उजियारा फैलाता है।
पता नहीं कैसे सागर में लहर हिलोरे खाती है,
पानी की बूँदे बरखा बन जग में जीवन लाती है।
पता नहीं कैसे धीरे से हवा सुहानी बहती है,
“सबको’ जीवन देना है” कानों में यह कहती है।
पता नहीं कैसे चंदा, आसमान में आता है,
गर्मी से आजाद कराके शीतलता दे जाता है।
पता नहीं क्यों, हम बच्चे जल्दी नहीं बड़े होते?
वरना उत्तर पाने को, कक्षा में ही अड़े होते।

*केंद्रीय विद्यालय-2, जे.एल.ए, बरेली, उत्तर प्रदेश।